वेयणापरिमाणविहाणाणुयोगद्दारं

वेयणापरिमाणविहाणे त्ति ।। १ ।।

एदमहियारसंभालणसुत्तं । किमट्ठमेदं वुच्चदे ? ण, अण्णहा परूवणाए णिप्फलत्तप्पसंगादो । ण ताव एदेण पयडिवेयणापरिमाणं वुच्चदे, णाणावरणादी अट्ठ चेव पयडीओ होंति त्ति पुव्वं परूविदत्तादो । ण ट्ठिदिवेयणाए पमाणपरूवणा एदेण कीरदे, कालविहाणे सप्पवंचेण परूविदट्ठिदिपमाणत्तादो । ण भाववेयणाए पमाणपरूवणा एदेण कीरदे, भावविहाणे परूविदस्स परूवणाए फलाभावादो । ण पदेसपमाणपरूवणा एदेण कीरदे, अणुक्कस्सदव्वविहाणे परूविदस्स पुणो परूवणाए फलाभावादो । ण च खेत्तवेयणाए पमाणपरूवणा एदेण कीरदे, खेत्तविहाणं परूविदत्तादो । अणहिगयपमेयाहिगमो[1] एदम्हादो णत्थि त्ति [2]णाढवेदव्वमेदमणुयोगद्दारं ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-पुव्वं दव्वट्ठियणयमस्सिदूण अट्ठ चेव पयडीयो होंति त्ति वुत्तं । तासिमट्ठण्णं चेव पयडीणं दव्वं-खेत्त-काल-भावपमाणादिपरूवणा च कदा । संपहि पज्जवट्ठियणयमस्सिदूण पयडि-

....

अब वेदनापरिमाणविधान अनुयोगद्वारका अधिकार है ।। १ ।।

यह सूत्र अधिकारका स्मरण कराता है ।

शंका – इसे किसलिये कहा जा रहा है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, इसके विना प्ररूपणाके निष्फल होनेका प्रसंग आता है ।

शंका – यह अधिकार प्रकृतिवेदनाके प्रमाण को तो बतलाता नहीं है, क्योंकि, ज्ञानावरण आदि आठ ही प्रकृतियाँ हैं, यह पहले ही प्ररूपणा की जा चुकी है । स्थितिवेदनाके प्रमाणकी प्ररूपणा भी नहीं करता है, क्योंकि, कालविधानमें विस्तारपूर्वक स्थितिका प्रमाण बतलाया जा चुका है । यह भाववेदनाके प्रमाणकी भी प्ररूपणा नहीं करता, क्योंकि, भावविधानमें प्ररूपित उसकी फिरसे प्ररूपणा करना निष्फल होगा । प्रदेशप्रमाणकी प्ररूपणा भी इसके द्वारा नहीं की जाती है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट द्रव्य विधानमें उसकी प्ररूपणा की जा चुकी है, अतएव उसकी यहाँ फिरसे प्ररूपणा करनेका कोई प्रयोजन नहीं है । क्षेत्रवेदनाके प्रमाणकी प्ररूपणा भी इसके द्वारा नहीं की जाती है, क्योंकि, उसकी प्ररूपणा क्षेत्रविधानमें की जा चुकी है । इस प्रकार चूँकि प्रकृति अधिकारसे अनधिगत पदार्थका अधिगम होता नहीं है, अतएव इस अधिकारको प्रारम्भ नहीं करना चाहिये ?

समाधान – इस शंकाका परिहार कहते हैं – पहले द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करके आठ ही प्रकृतियाँ होती हैं, ऐसा कहा गया है, तथा उन आठों प्रकृतियोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव आदिके प्रमाणकी भी प्ररूपणा की गई है । अब यहाँ पर्यायार्थिक नयका आश्रय करके प्रकृतियोंके

....

(१) मप्रतिपाठोऽयम् । अ–आ–काप्रतिषु 'अणहिगमेयमेयाहिगमो', ताप्रतौ 'अणहिगमे पमेयाहिगमो' इति पाठः ।

(२) अ–आ–काप्रतिषु 'णादवेदव्व–' इति पाठः ।

पमाणपरूवणट्ठमेदमणुयोगद्दारमागदं । पज्जवट्ठियणयमवलंबिदूण परूविज्जमाणपयडीणं दव्व-खेत्त-काल-भावादिपरूवणा किण्ण कीरदे ? ण, ताए परूविज्जमाणाए पुव्विल्लपरूवणादो भेदाभावेण तदणुत्तीदो ।

तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-पगदिअट्ठदा समयपबद्धट्ठदा खेत्तपच्चासए त्ति ।। २ ।।

पयडी सीलं सहावो इच्चेयट्ठो। अट्ठो पयोजणं तस्स भावो अट्ठदा । पयडीए अट्ठदा पयडिअट्ठदा[1] । सा एगो अहियारो । समये प्रबध्यत इति समयप्रबद्धः । अर्य्यते परिच्छिद्यते इत्यर्थः । स चासावर्थश्च समयप्रबद्धार्थः । तस्य भावः समयप्रबद्धार्थता । एसो बिदियो अहियारो । क्षेत्रं प्रत्याश्रयो यस्याः सा क्षेत्रप्रत्याश्रया अधिकृतिः । एवं तिविहा वेयणापरिमाणपरूवणा होदि । पयडिभेएण कम्मभेदपरूवणा एगो अहियारो । समयपबद्धभेदेण पयडिभेदपरूवओ बिदियो अहियारो । खेत्तभेएण पयडिभेदपरूवओ तदियो अहियारो त्ति वुत्तं होदि ।

पगदिअट्ठदाए णाणावरणीय-दंसणावरणीयकम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ३ ।।

....

प्रमाणकी प्ररूपणा करनेके लिये यह अनुयोगद्वार प्राप्त हुआ है ।

शंका - पर्यायार्थिक नयका आश्रय करके कही जानेवाली प्रकृतियोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव आदिकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जा रही है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, उक्त प्ररूपणाके करनेमें पूर्वोक्त प्ररूपणासे कोई विशेषता नहीं रहती। अतएव वह यहाँ नहीं की गई है ।

उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं-प्रकृत्यर्थता समयप्रबद्धार्थता और क्षेत्रप्रत्यास ।। २ ।।

प्रकृति, शील और स्वभाव ये समानार्थक शब्द हैं, अर्थ शब्दका वाच्यार्थ प्रयोजन है और उसका भाव अर्थता है । प्रकृतिकी अर्थता प्रकृत्यर्थता, यह षष्ठी तत्पुरुष समास है । वह प्रथम अधिकार है । एक समयमें जो बाँधा जाता है वह समयप्रबद्ध है । जो अर्यते अर्थात् निश्चय किया जाता है वह अर्थ है। समयप्रबद्ध रूप अर्थ समयप्रबद्धार्थ इस प्रकार यहाँ कर्मधारय समास है; समयप्रबद्धार्थके भावको समयप्रबद्धार्थता कहा गया है । यह द्वितीय अधिकार है । क्षेत्र है प्रत्याश्रय जिसका वह क्षेत्रप्रत्याश्रय अधिकार है । इस प्रकार वेदनापरिमाणकी प्ररूपणा तीन प्रकार की है । प्रकृतिभेदसे कर्मभेदकी प्ररूपणा यह एक अधिकार, समयप्रबद्धोंके भेदसे प्रकृतिभेदका प्ररूपक दूसरा अधिकार और क्षेत्रके भेदसे प्रकृतिभेदका प्ररूपक तीसरा अधिकार है, यह उसका अभिप्राय है ।

प्रकृति-अर्थता अधिकारकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ३ ।।

....

(१) 'पयडीए अट्ठदा पयडिअट्ठदा' इत्येतावानयं पाठस्ताप्रतौ नोपलभ्यते ।

एदं पुच्छासुत्तं तिविहं संखेज्जं णवविहमसंखेज्जं अणंत्तं च अस्सिदूण वक्खाणेयव्वं।

णाणावरणीय-दंसणावरणीयकम्मस्स असंखेज्जलोगपयडीओ ।।४।।

णाणावरणीयस्स[1] दंसणावरणीयस्स च कम्मस्स पयडीओ सहावा सत्तीयो असंखेज्जलोगमेत्ता । कुदो एत्तियाओ होंति त्ति णव्वदे ? आवरणिज्जणाण-दंसणाणमसंखेज्जलोगमेत्तभेदुवलंभादो । तं जहा-सुहुमणिगोदस्स जं जहण्णलद्धिअक्खरं तमेगं णाणं[2] । तण्णिरावरणं, अक्खस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ[3] इदि वयणादो[4] जीवाभावप्पसंगादो वा । पुणो लद्धिअक्खरे सव्वजीवेहि खंडिदे लद्धे तत्थेव पक्खित्ते बिदियं णाणं होदि । पुणो बिदियणाणे सव्वजीवेहि खंडिदे लध्दे तत्थेव पक्खित्ते तदियं णाणं होदि। एवं छवड्ढिकमेण णेयव्वं जाव असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण अक्खरणाणं समुप्पण्णे त्ति । अक्खरणाणादो उवरि एगेगक्खरुत्तरवड्ढीए गच्छमाणणाणाणं अक्खरसमासो त्ति सण्णा । एत्थ अक्खरणाणादो उवरि छव्विहा वड्ढी णत्थि, दुगुण-

....

इस सूत्रका व्याख्यान तीन प्रकारके संख्यात और नौ प्रकारके असंख्यात व नौ प्रकारके अनन्तका आश्रय करके करना चाहिये ।

ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मका असंख्यात प्रकृतियाँ हैं ।। ४ ।।

ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ अर्थात् स्वभाव या शक्तियाँ असंख्यात लोक प्रमाण हैं ।

शंका -उनकी प्रकृतियाँ इतनी हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान - चूँकि आवरणके योग्य ज्ञान व दर्शनके असंख्यात लोकमात्र भेद पाये जाते हैं अतएव उनके आवारक उक्त कर्मोंकी प्रकृतियाँ भी उतनी ही होनी चाहिये । यथा-सूक्ष्म निगोद जीवका जो जघन्य लब्ध्यक्षर रूप एक ज्ञान है वह निरावरण है, क्योंकि, अक्षरके अनन्तवें भागमात्र ज्ञान सदा प्रगट रहता है, ऐसा आगमवचन है । अथवा, ज्ञानके अभावमें चूँकि जीवके अभावका भी प्रसंग आता है, अतएव अक्षरके अनन्तवें भागमात्र ज्ञान सदा प्रगट रहता हे, यह स्वीकार करना चाहिये ।

अब लब्ध्यक्षरको सब जीवोंसे खण्डित करनेपर जो लब्ध हो उसे उसीमें मिलानेपर द्वितीय ज्ञान होता है । फिर द्वितीय ज्ञानको सब जीवोंसे खण्डित करनेपर जो लब्ध हो उसको उसी में मिलानेपर तीसरा ज्ञान होता है । इस प्रकार छह वृद्धियोंके क्रमसे असंख्यात लोकमात्र छह स्थान जाकर अक्षरज्ञानके पूर्ण होने तक ले जाना चाहिये । अक्षरज्ञानके आगे उत्तरोत्तर एक एक अक्षरकी वृद्धिसे जानेवाले ज्ञानोंकी अक्षरसमास संज्ञा है । यहाँ अक्षरज्ञानसे आगे छह वृद्धियाँ नहीं हैं, किन्तु दुगुणे तिगुणे इत्यादि क्रमसे अक्षरवृद्धि ही होती है, ऐसा कितने ही

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'णाणावरणीय' इति पाठः । (२) सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्हि । फासिंदियमदिपुव्वं सुदणाणं लद्धिअक्खरयं ।। गो.जी.३२१. । (३) अ-आ-काप्रतिषु 'णिच्चुग्घादियओ' इति पाठः । (४) सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्मि । हवदि हु सव्वजहण्णं णिच्चुग्घाडं णिरावरणं ।। गो.जी. ३१९।

तिगुणादिकमेण अक्खरवड्ढी चेव होदि त्ति के वि आइरिया भणंति । के वि पुण अक्खरणाण-प्पहुडि उवरि सव्वत्थ खओवसमस्स छव्विहा वड्ढी होदि त्ति भणंति । एवं दोहि उवदेसेहि पद-पदसमास-संघाद-संघादसमास-पडिवत्ति-पडिवत्तिसमास-अणुयोग-अणुयोगस-मास-पाहुडपाहुड-पाहुडपाहुडसमास-पाहुड-पाहुडसमास-वत्थु-वत्थुसमास-पुव्व-पुव्वसमास-णाणाणं[1] परूवणा कायव्वा । एवमसंखेज्जलोगमेत्ताणि सुदणाणाणि । मदिणाणाणि वि एत्तियाणि चेव, सुदणाणस्स मदिणाणपुरंगमत्तादो कज्जभेदेण कारणभेदुवलंभादो वा । ओहिमणपज्जवणाणाणं जहा मंगलदंडए भेदपरूवणा कदा तहा कायव्वा । केवलणाणमेयविधं, कम्मक्खएण उप्पज्जमाणत्तादो । जत्तिया[2] णाणवियप्पा तत्तियाओ चेव कम्मस्स आवरणसत्तीयो । कत्तो एदं णव्वदे ? अण्णहा असंखेज्जलोगमेत्त-णाणाणुववत्तीदो । एवं दंसणस्स वि परूवणा कायव्वा, सव्वणाणाणं दंसणपुरंगमत्तादो । जत्तियाणि दंसणाणि तत्तियाओ चेव दंसणावरणीयस्स आवरणसत्तीओ । एवं णाणावरणीय-दंसणावरणीयाणमसंखेज्जलोगमेत्तपयडीओ त्ति सिद्धं ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ५ ।।

एत्थ पयडीयो त्ति वुत्ते कम्माणं गहणं, सहावभेदेण सहावीणं पि भेदुवलंभादो । जत्तिया कम्माणं सहाया तत्तियाणि चेव कम्माणि त्ति भणिदं होदि ।

....

आचार्य कहते हैं । परन्तु कितने ही आचार्य अक्षरज्ञानसे लेकर आगे सब जगह क्षयोपशम ज्ञानके छह प्रकारकी वृद्धि होती है, ऐसा कहते हैं । इस प्रकार दो उपदेशोंसे पद, पदसमास, संघात, सघातसमास, प्रतिपत्ति, प्रतिपत्तिसमास, अनुयोग, अनुयोगसमास, प्राभृतप्राभृत, प्राभृतप्राभृतसमास, प्राभृत, प्राभृतसमास, वस्तु, वस्तुसमास, पूर्व और पूर्वसमास ज्ञानोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये । इस प्रकार श्रुतज्ञान असंख्यात लोक प्रमाण है । मतिज्ञान भी इतने ही हैं, क्योंकि, श्रुतज्ञान मतिज्ञानपूर्वक ही होता है, अथवा कारणके भेदसे चूँकि कार्यका भेद पाया जाता है अतएव वे भी असख्यात लोकप्रमाण ही हैं । अवधि और मन:पर्यायज्ञानोंके भेदोंकी प्ररूपणा जैसे मंगलदण्डकमें की गई है वैसे करनी चाहिये । केवलज्ञान एक प्रकारका है, क्योंकि, वह कर्मक्षयसे उत्पन्न होनेवाला है । जितने ज्ञानके भेद हैं उतनी ही कर्मकी आवरण शक्तियाँ हैं ।

शंका – यह किस प्रमाण से जाना जाता है ?

समाधान – कारण कि उसके बिना असंख्यात लोकप्रमाण ज्ञान बन नहीं सकते ।

इसी प्रकार दर्शनकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि सब ज्ञान दर्शनपूर्वक ही होते हैं । जितने दर्शन हैं उतनी ही दर्शनावरणीयकी आवरण शक्तियाँ हैं । इस प्रकारसे ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीयकी प्रकृतियाँ असंख्यात लोकप्रमाण हैं, यह सिद्ध है ।

इतनी मात्र प्रकृतियाँ हैं ।। ५ ।।

यहाँ सूत्रमें 'प्रकृतियाँ' एसा कहनेपर कर्मोंका ग्रहण होता है, क्योंकि, स्वभावके भेदसे स्वभा-ववालोंका भी भेद पाया जाता है । अभिप्राय यह है कि जितने कर्मोंके स्वभाव हैं उतने ही कर्म हैं ।

....

(१) गो.जी. ३१६-३१७ । (२) अ-आ-का-प्रतिषु 'जेत्तिया' इति पाठः ।

वेयणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ६ ।।

सुगमं ।

वेयणीयस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ ।। ७ ।।

सादावेयणीयमसादावेयणीयमिदि दो चेव सहावा, सुह-दुक्खवेयणाहिंतो पुधभूदाए अण्णिस्से वेयणाए अणुवलंभादो । सुहभेदेण दुहभेदेण च अणंतवियप्पेण वेयणीयकम्मस्स अणंताओ सत्तीओ किण्ण पढिदाओ[1] ? सच्चमेदं जदि पज्जवट्ठियणओ अवलंबिदो । किं तु एत्थ दव्वट्ठियणओ अवलंबिदो त्ति वेयणीयस्स ण तत्तियमेत्तसत्तीओ, दुवे चेव । पज्जवट्ठियणओ एत्थ किण्णावलंबिदो ? ण, तदवलंबणे पओजणाभावादो । णाण-दंसणावरणेसु किमट्ठमवलंबिदो ? जीवसहावावगमणट्ठं ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ८ ।।

जत्तिया सहावा अत्थि तत्तिया चेव पयडीओ होंति ।

मोहणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ९ ।।

....

वेदनीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ६ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

वेदनीयकर्मकी दो प्रकृतियाँ हैं ।। ७ ।।

सातावेदनीय और असातावेदनीय इस प्रकार वेदनीयके दो ही स्वभाव हैं, क्योंकि, सुख व दुख रूप वेदनाओंसे भिन्न अन्य कोई वेदना पायी नहीं जाती ।

शंका – अनन्त विकल्प रूप सुखके भेदसे और दुःखके भेदसे वेदनीय कर्म की अनन्त शक्तियाँ क्यों नहीं कही गई हैं ?

समाधान – यदि पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन किया गया होता तो यह कहना सत्य था, परन्तु, चूँकि यहाँ द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन किया गया है अतएव वेदनीय की उतनी मात्र शक्तियाँ सम्भव नहीं हैं, किन्तु दो ही शक्तियाँ सम्भव हैं ।

शंका – यहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, उसके अवलम्बनका कोई प्रयोजन नहीं था ।

शंका – ज्ञानावरण और दर्शनावरणकी प्ररूपणामें उसका अवलम्बन किसलिये किया गया है ?

समाधान – जीवस्वभावका ज्ञान करानेके लिये यहाँ उसका अवलम्बन किया गया है ।

उसकी इतनी ही प्रकृतियाँ हैं ।। ८ ।।

कारण कि जितने स्वभाव होते हैं उतनी ही प्रकृतियाँ होती हैं ।

मोहनीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ९ ।।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'पदिदाओ', ताप्रतो 'पदि (ठि) दाओ' इति पाठः ।

सुगमं ।

मोहणीयस्स कम्मस्स अट्ठावीसं पयडीओ ।। १० ।।

तं जहा–मिच्छत्त–[1]सम्मामिच्छत्त–सम्मत्त–अणंताणुबंधि–अपच्चक्खाणावरणीय–पच्चक्खाणावरणीय–संजुलण–कोह–माण–माया–लोह–हस्स–रइ–अरइ–सोग–भय दुगुंछित्थि–पुरिसणवुंसयभेएण मोहणीयस्स कम्मस्स अट्ठावीस सत्तीओ । एसा वि परूवणा असुद्धदव्वट्ठियणयमवलंबिऊण कदा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे मोहणीयस्स असंखेज्जलोगमेत्तीओ सत्तीओ होंति, असंखेज्जलोगमेत्तउदयट्ठाणण्णहाणुववत्तीदो । एत्थ पुण पज्जवट्ठियणओ किण्णावलंबिदो ? गंथबहुत्तभएण अत्थावत्तीए तदवगमादो वा णावलंबिदो ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ११ ।।

जेण मोहणीयस्स अट्ठावीस सत्तीओ तेण पयडीओ वि अट्ठावीसं चेव होंति, एदाहिंतो पुधभूदभिण्णजादिसत्तीए अणुवलंभादो ।

आउअस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। १२ ।।

सुगमं ।

....

यह सूत्र सुगम है ।

मोहनीय कर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियाँ हैं ।। १० ।।

यथा–मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके भेदसे मोहनीय कर्मकी अट्ठाईस शक्तियाँ हैं । यह भी प्ररूपणा अशुद्ध द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके की गई है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर तो मोहनीय कर्मकी असंख्यात लोकमात्र शक्तियाँ हैं, क्योंकि, अन्यथा उसके असंख्यात लोकमात्र उदयस्थान बन नहीं सकते ।

शंका – तो फिर यहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन क्यों नहीं लिया गया है ?

समाधान – ग्रन्थबहुत्वके भयसे अथवा अर्थापत्तिसे उनका परिज्ञान हो जानेसे उसका अवलम्बन नहीं लिया गया है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ११ ।।

चूँकि मोहनीयकी शक्तियाँ अट्ठाईस हैं अत: उसकी प्रकृतियाँ भी अट्ठाईस ही हैं, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत भिन्नजातीय शक्ति नहीं पायी जाती ।

आयुकर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। १२ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

....

(१) अ–आ–काप्रतिषु 'मिच्छत्तसम्मामिच्छत्त', ताप्रतौ 'मिच्छत्त–सम्मामिच्छत्त–(सम्मत्त)' इति पाठः ।

आउअस्स कम्मस्स चत्तारि पयडीओ ।। १३ ।।

कुदो ? देव-मणुस्स-तिरिक्ख-णेरइयभवधारणसरूवाणं सत्तीणं चदुण्णमुवलंभादो। ऐसा वि परूवणा असुद्धदव्वट्ठियणयविसया । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे आउ-अपयडी वि असंखेज्जलोगमेत्ता भवदि, कम्मोदयवियप्पाणमसंखेज्जलोगमेत्ताणमुवलंभादो। एत्थ वि गंथबहुत्तभएण अत्थावत्तीए तदवगमादो वा पज्जवट्ठियणओ णावलंबिदो ।

एवडियाओ पयडीओ ।। १४ ।।

जेण आउअस्स चत्तारि चेव सहावा तेण चत्तारि चेव पयडीओ होंति ।

णामस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। १५ ।।

सुगमं।

णामस्स कम्मस्स असंखेज्जलोगमेत्तपयडीओ ।। १६ ।।

एत्थ किमट्ठं पज्जवट्ठियणओ अवलंबिदो ? आणुपुव्वीवियप्पपदुप्पायणट्ठं । तत्थ णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबाहल्ले तिरियपदरे सेडीए असंखेज्जभागमेत्तेहि ओगाहणावियप्पेहि गुणिदे जो रासी उप्पज्जदि तेत्तियमे-त्तीओ सत्तीओ होंति । तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्विणामाए लोगे सेडीए असंखेज्जभाग-मेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदे जा संखा उप्पज्जदि तत्तियमेत्ताओ सत्तीओ । मणुसगदि-

....

आयुकर्मकी चार प्रकृतियाँ हैं ।। १३ ।।

इसका कारण यह है कि देव, मनुष्य, तिर्यंच और नारक पर्यायको धारण कराने रूप शक्तियाँ चार पायी जाती हैं । यह प्ररूपणा भी अशुद्ध द्रव्यार्थिक नयको विषय करनेवाली है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर तो आयुकी प्रकृतियाँ भी असंख्यात लोकमात्र हैं, क्योंकि, कर्मके उदय रूप विकल्प असंख्यात लोकमात्र पाये जाते हैं । यहाँ भी ग्रन्थबहुत्वके भयसे अथवा अर्थापत्तिसे उनका परिज्ञान हो जानेके कारण पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन नहीं लिया गया है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। १४ ।।

चूँकि आयुके चार ही स्वभाव हैं अतएव उसकी चार ही प्रकृतियाँ होती हैं ।

नामकर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ?

यह सूत्र सुगम है ।

नामकर्मकी असंख्यात लोकमात्र प्रकृतियाँ हैं ।। १६ ।।

शंका – यहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन किसलिये लिया गया है ?

समाधान – आनुपूर्वीके भेदोंको बतलानेके लिये यहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है । उनमेंसे अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र बाहल्यरूप तिर्यक्प्रतरको श्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाभेदोंसे गुणित करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है उतनी मात्र नरकगतिप्रायो-ग्यानपूर्वी नामकर्मकी शक्तियाँ होती हैं । श्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाभेदोंसे लोकको गुणित करनेपर जो संख्या उत्पन्न होती है उतनी मात्र तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी

पाओग्गाणुपुव्विणामाए पणदालीसजोयणसदसहस्साबाहल्लाणि तिरियपदराणि उड्ढं-कवाडछेदणणिप्फण्णाणि सेडियसंखेज्जभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदे जा संखा उप्पज्जदि तत्तियमेत्तीओ पयडीओ । देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए णवजोयणसयबाहल्ले तिरियपदरे सेडीए असंखेज्जभागमेत्तेहि ओगाहणवियप्पेहि गुणिदे जा संखा उप्पज्जदि तत्तियमेत्तीओ पयडीओ । गदि-जादि-सरीरादीणं पयडीणं पि जाणिय भेदपरूवणा कायव्वा।

एवडियाओ पयडीओ ।। १७ ।।

जत्तियाओ णामकम्मस्स सत्तीओ पुव्वं परूविदाओ तत्तियमेत्ताओ चेव तस्स पयडीओ होंति त्ति घेत्तव्वं ।

गोदस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। १८ ।।

सुगमं ।

गोदस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ ।। १९ ।।

[1]उच्चागोदणिव्वत्तणप्पिया णीचागोदणिव्वत्तणप्पिया चेदि गोदस्स दुवे पयडीओ[2] । अवांतरभेदेण जदि वि बहुआवो अत्थि तो वि ताओ ण उत्ताओ गंथबहुत्तभएण अत्थावत्तीए तदवगमादो वा ।

....

शक्तियाँ होती हैं । ऊर्ध्वकपाटके अर्धच्छेदोंसे उत्पन्न पैंतालीस लाख योजनबाहल्य रूप तिर्यक्प्रतरोंको श्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाभेदोंसे गुणित करनेपर जो संख्या उत्पन्न होती है उतनी मात्र मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्रकृतियाँ होती हैं । नौ सौ योजन बाहल्यरूप तिर्यक्प्रतरको श्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाभेदोंसे गुणित करनेपर जो संख्या उत्पन्न होती है उतनी मात्र देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्रकृतियाँ होती हैं । गति, जाति व शरीर आदिक प्रकृतियोंके भी भेदोंकी प्ररूपणा जानकर करनी चाहिये ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। १७ ।।

नामकर्मकी जितनी शक्तियाँ पूर्वमें कही जा चुकी हैं उतनी ही उसकी प्रकृतियाँ हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

गोत्र कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। १८ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

गोत्रकर्मकी दो प्रकृतियाँ हैं ।। १९ ।।

उच्चगोत्रको उत्पन्न करनेवाली और नीचगोत्रको उत्पन्न करनेवाली, इस प्रकार गोत्रकी दो प्रकृतियाँ हैं । अवान्तर भेदसे यद्यपि वे बहुत हैं तो भी ग्रन्थके बढ जानेसे अथवा अर्थापत्तिसे उनका ज्ञान हो जानेके कारण यहाँ नहीं कहा है ।

....

(१) ताप्रतावत: प्राक् 'सुगमं' इत्यधिकः पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'दोयपयडीओ' इति पाठः ।

एवडियाओ पयडीओ ।। २० ।।

जेण दुवे चेव गोदकम्मस्स सत्तीयो तेण तस्स दो चेव पयडीओ ।

अंतराइयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। २१ ।।

सुगमं ।

अंतराइयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ ।। २२ ।।

सुगमं ।

एवडियाओ पयडीओ ।। २३ ।।

कुदो ? पंचण्णं विसेसणाणं भेदेण तव्विसेसिदकम्मक्खंधाणं पि भेदस्स णाओवगयस्स अणब्भुवगमे [१]पमाणाणणुसारित्तप्पसंगादो । एवं पयडिअट्ठदा समत्ता ।

समयपबद्धट्ठदाए ।। २४ ।।

एदमहियारसंभालणसुत्तं सुगमं ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। २५ ।।

एदं सुत्तं तिविहसंखेज्जे णवविहअसंखेज्जे णवविहअणंते च ढोइय एदस्स सुत्तस्स अत्थो वत्तव्वो ।

....

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। २० ।।

चूँकि गोत्रकर्मकी दो ही शक्तियाँ हैं अतएव उसकी दो ही प्रकृतियाँ हैं ।

अन्तराय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। २१ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

अन्तराय कर्मकी पाँच प्रकृतियाँ हैं ।। २२ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। २३ ।।

कारण यह कि पाँच विशेषणोंके भेदसे विशेषताको प्राप्त हुए उस कर्मके स्कन्धोंका भी भेद न्याय प्राप्त है । उसके न माननेपर प्रमाणकी अननुसारिताका प्रसंग आता है । इस प्रकार प्रकृत्यर्थता समाप्त हुई ।

अब समयप्रबद्धार्थताका अधिकार है ।। २४ ।।

यह अधिकारका स्मरण करानेवाला सूत्र सुगम है ।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। २५ ।।

तीन प्रकारके संख्यात, नौ प्रकारके असंख्यात और नौ प्रकारके अनन्तको लेकर इस सूत्रका अर्थ कहना चाहिये ।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'पमाणाणुसाहित्त', ताप्रतौ 'पमाणाणुसारित्त (त्ता)', मप्रतौ 'पमाणाणुसारित्त' इति पाठः ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी तीसं तीसं सागरोवमकोडाकोडीयो समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए ।। २६ ।।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइएसु जा एक्केक्का पयडी तिस्से कम्मट्ठिदि-समयभेदेण भेदो वुच्चदे । तं जहा-तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ एदेसिं कम्माणं कम्मट्ठिदी। तिस्से चरिमसमए कम्मट्ठिदिमेत्ता समयपबद्धा अत्थि । कुदो ? कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमओ त्ति एत्थ बद्धसमयपबद्धाणं एगपरमाणुमादिं कादूण जाव अणंतपरमाणूणं कम्मट्ठिदिचरिमसमए पाहुडणिल्लेवणट्ठाणसुत्तबलेण[1] उवलंभादो । कम्मट्ठिदिआदिसमए पबद्धपरमाणूणं कम्मट्ठिदिचरिमसमए एगा चेव ट्ठिदी होदि । एसा एगा पयडी । बिदियसमए पबद्धकम्मपरमाणूण[2] कम्मट्ठिदिचरिमसमए वट्टमाणा बिदिया पयडी, एदेसिं दुसमयट्ठिदिदंसणादो । ण च एगसमयादो दोण्णं समयाणमेयत्तं, विरोहादो । तदो तब्भेदेण पयडिभेदेण वि होदव्वमण्णहा सव्वसंकरप्पसंगादो । एवं तदियसमयपबद्धाणमण्णा पयडी, चउत्थसमयपबद्धाणमण्णा पयडी त्ति णेदव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमयपबद्धो त्ति । पुणो एदे समयबद्धे कालभेदेण पयडिभेदमुवगए संकलिज्जमाणे एगसमयपबद्धसलागाणं ठविय तीसकोडाकोडीहि गुणिदे एत्तियमेत्ताओ कालणिबंधणपयडीओ णाण-दंसणावरण-अंतराइयाणमेक्केक्किस्से पयडीए होंति ।

....

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्मकी एक एक प्रकृति तीस कोडा-कोडी सागरोपमोंको समय प्रबद्धार्थतासे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी है ।। २६ ।।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय इनमेंसे जो एक एक प्रकृति है उसका कर्मस्थितिके समयोंके भेदसे भेद कहते हैं । यथा-इन कर्मोंकी कर्मस्थिति तीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण है । उसके अन्तिम समयमें कर्मस्थिति प्रमाण समयप्रबद्ध होते हैं, क्योंकि, कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर उसके अन्तिम समय तक यहाँ बाँधे गये समयप्रबध्दोंके एक परमाणुसे लेकर अनन्त परमाणु तक कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें कसायपाहुडके निर्लेपनस्थान सूत्रके बलसे पाये जाते हैं । कर्मस्थितिके प्रथम समयमें तो बँधे हुए परमाणुओंकी कर्मस्थिति के अन्तिम समयमें एक ही स्थिति होती है । यह एक प्रकृति है। द्वितीय समयमें बांधे गये कर्मपरमाणुओंकी कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें वर्तमान द्वितीय प्रकृति है, क्योंकि, इनकी दो समय स्थिति देखी जाती है । एक समयका दो समयोंके साथ अभेद नहीं हो सकता, क्योंकि, उसमें विरोध है । इस कारण समयभेदसे प्रकृतिभेद भी होना ही चाहिये, अन्यथा सर्वसंकर दोषका प्रसग आता है । इसी प्रकार तृतीय समयमें बांधे गये परमाणुओंकी अन्य प्रकृति, चतुर्थ समयमें बांधे गये परमाणुओंकी अन्य प्रकृति, इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । अब कालके भेदसे प्रकृतिभेदको प्राप्त हुए इन समयप्रबद्धोंका संकलन करनेपर एक समयप्रबद्धकी शलाकाओंको स्थापितकर तीस कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित करनेपर इतनी मात्र ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायमेंसे एक एक कर्मकी प्रकृतियाँ होती हैं ।

....

(१) अ-आप्रत्योः '-णिलेवण' इति पाठः । (२) अ-काप्रत्योः 'परमाणू' इति पाठः ।

एवडियाओ पयडीओ ।। २७ ।।

जत्तियाओ कालणिबंधणपयडीओ णाणावरणादीणमेक्केक्का पयडी तत्तियमेत्ता होदि त्ति भणिदं होदि । णवरि मदिणाणावरणीय-सुदणाणावरणीय-ओहिणाणावरणीय चक्खु-अचक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणं च तीसंसागरोवमकोडाकोडिगुणिदाए एगसमय-पबद्धट्ठदाए असंखेज्जलोगेहि गुणिदाए एदासिं[1] सव्वपयडिपमाणं होदि । अधवा, कम्म-ट्ठिदिपढमसमए बद्धकम्मक्खंधो एगसमयपबद्धट्ठदा, बिदियसमयपबद्धो बिदियसमयपब-द्धट्ठदा । एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । पुणो एगसमयपबद्धट्ठदं ठविय तीसंसागरोवमकोडाकोडीहि गुणिदे एक्केक्कस्स कम्मस्स एवडियाओ पयडीओ होंति । एसा परूवणा एत्थ पहाणा, ण पुव्विल्ला एग-दोआदिसमयट्ठिदिदव्वमस्सिदूण परूविदा

वेयणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। २८ ।।

सुगमं

वेदणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी तीसं-पण्णारससागरोवम-कोडाकोडीओ समयबद्धट्ठदाए गुणिदाए ।। २९ ।।

असादावेदणीयस्स कम्मट्ठिदिपढमसमए जो बद्धो कम्मक्खंधो सा[2] एगा समय-

....

उनमेंसे प्रत्येककी इतनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। २७ ।।

जितनी कालनिबन्धन प्रकृतियाँ हैं, ज्ञानावरणादिकोंमेंसे प्रत्येककी एक एक प्रकृति उतनी मात्र होती है, यह उक्त सूत्रका अभिप्राय है । विशेष इतना है कि मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और अवधिदर्शनावरणीयकी तीस कोडाकोडि सागरोपमोंसे गुणित एक समयप्रबद्धार्थताको असंख्यात लोकोंसे गुणित करनेपर इनकी समस्त प्रकृतियोंका प्रमाण होता है ।

अथवा, कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बाँधे गये कर्मस्कन्धका नाम एक समयप्रबद्धार्थता है, द्वितीय समयमें बाँधे गये कर्मस्कन्धका नाम द्वितीय समयप्रबद्धार्थता है, इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । फिर एक समयप्रबद्धार्थताको स्थापितकर तीस कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित करनेपर एक एक कर्मकी इतनी प्रकृतियाँ होती हैं । यह प्ररूपणा यहाँ प्रधान है, न कि एक दो आदि समयमात्र स्थितिके द्रव्यका आश्रय करके की गई पूर्वोक्त प्ररूपणा ।

वेदनीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। २८ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

तीस और पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपमोंको समयप्रबद्धार्थतासे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी मात्र वेदनीयकर्मकी एक एक प्रकृति है ।। २९ ।।

असाता वेदनीयकी कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो कर्मस्कन्ध बाँधा गया है वह एक समय-

....

(१) अ-काप्रत्योः 'एदेसिं', इति पाठः, आप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः । (२) ताप्रतौ 'सो' इति पाठः ।

पबद्धट्ठदा, बिदियसमए पबद्धो बिदिया समयपबद्धट्ठदा, तदियसमए पबद्धो तदिया समयपबद्धट्ठदा; एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एत्थ एगसमयपबद्धट्ठदं ठविय तीसंसागरोवमकोडाकोडीहि गुणिदे असादावेदणीयस्स एवडियाओ कालणिबंधणपयडीओ होंति। असादावेदणीयस्स सांतरबंधिस्स[1] समयपबद्धट्ठदाए तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ गुणगारो ण होंति, सादबंधणद्धाए असादस्स बंधाभावादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा- सगकम्मट्ठिदिअब्भंतरे एदम्हि उद्देसे असादस्स बंधो णत्थि चेवे त्ति ण णियमो अत्थि, णाणाजीवे अस्सिदूण कम्मट्ठिदीए सव्वसमएसु असादबंधुवलंभादो । एगजीवमस्सिदूण कम्मट्ठिदिअब्भंतरे असादस्स ण णिरंतरो बंधो लब्भदि त्ति भणिदे ण, तत्थ वि [2]णाणाकम्मट्ठिदीयो अस्सिदूण णिरंतरबंधुवलंभादो । ण च एगजीवेण एत्थ अहियारो, कम्मट्ठिदिमस्सिदूण समयपबद्धट्ठदाए परूविदुमाढत्तादो । तम्हा असादवेयणीयस्स अध्दुवबंधिस्स वि तीसंसागरोवमकोडाकोडीयो गुणगारो होंति त्ति सिद्धं ।

असादबंधवोच्छिण्णकाले बद्धं सादमसादत्ताए संकंतं घेत्तूण तीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता समयपबद्धट्ठदा त्ति किण्ण भण्णदे ? ण, सादसरूवेण बद्धाणं कम्मक्खंधाणं

....

प्रबद्धार्थता है, द्वितीय समयमें बाँधा गया कर्मस्कन्ध द्वितीय समयप्रबद्धार्थता है, तृतीय समयमें बाँधा गया कर्मस्कन्ध तृतीय समयप्रबद्धार्थता है, इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये। यहाँ एक समयप्रबद्धार्थताको स्थापितकर तीस कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित करनेपर इतनी मात्र असाता वेदनीयकी कालनिबन्धन प्रकृतियाँ होती हैं ।

शंका – असाता वेदनीय चूँकि सान्तरबन्धी प्रकृति है, अतएव उसकी समयप्रबद्धार्थताका गुणकार तीस कोडाकोडी सागरोपम नहीं हो सकता, क्योंकि, साता वेदनीयके बन्धकालमें असाता वेदनीयका बन्ध सम्भव नहीं है ?

समाधान – यहाँ इस शंकाका परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है–अपनी कर्मस्थितिके भीतर इस उद्देश्यमें असाता वेदनीयका बन्ध है ही नहीं, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, नाना जीवोंका आश्रय करके कर्मस्थितिके सब समयोंमें असाताका बन्ध पाया जाता है ।

शंका – एक जीवका आश्रय करके तो कर्मस्थितिके भीतर असाता वेदनीयका निरन्तर बन्ध नहीं पाया जाता है ?

समाधान – ऐसा कहनेपर उत्तरमें कहते हैं कि 'नहीं', क्योंकि, वहाँपर भी नाना कर्मस्थितियोंका आश्रय करके निरन्तर बन्ध पाया जाता है । और यहाँ एक जीवका अधिकार भी नहीं है, क्योंकि, कर्मस्थितिका आश्रय करके समयप्रबद्धार्थताकी प्ररूपणा प्रारम्भ की गई है । इस कारण अध्रुवबन्धी असाता वेदनीयका गुणकार तीस कोडाकोडी सागरोपम है, यह सिद्ध है ।

शंका – असाता वेदनीयके बन्धव्युच्छित्तिकालमें बाँधे गये व असाता वेदनीय स्वरूपसे परिणत हुए साता वेदनीयको ग्रहणकर तीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धार्थता क्यों नहीं कहते ?

....

(१) प्रतिषु 'सांतरबंधिसमय' इति पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'णाण' इति पाठः ।

संकमेण असादत्ताए परिणदाणं असादसमयपबद्धत्तविरोहादो । अकम्मसरूवेण ट्ठिदा पोग्गला असादकम्मसरूवेण परिणदा जदि होंति ते असादसमयपबद्धा णाम । तम्हा संकमेणागदाणं ण समयपबद्धववएसो त्ति सिद्धं । एवं घेप्पमाणे सादवेदणीयस्स वि आवलिऊणतीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमयपबद्धट्ठदापसंगादो । कुदो ? बंधावलियादीदअसादट्ठिदीए सादसरूवेण संकंताए[1] सादसरूवेण चेव बंधावलिऊणकम्मट्ठिदिमेत्तकालमवट्ठाणदंसणादो। ण च सादस्स एत्तियमेत्ता समयपबद्धट्ठदा अत्थि, सुत्ते पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमयपबद्धट्ठदुवदेसादो[2] । ण च असादस्स सादत्ताए संकंतस्स पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्ता चेव ट्ठिदी होदि, खंडयघादेण विणा कम्मट्ठिदीए घादाभावादो । एव सादावेदणीयस्स वि वत्तव्वं, विसेसाभावादो ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ३० ।।

जत्तियाओ सादासादवेयणीयाणं कालगदसत्तीयो तत्तियाओ चेव तासिं पयडीओ त्ति घेत्तव्वं ।

....

समाधान – क्योंकि, साता वेदनीयके स्वरूपसे बाँधे गये परन्तु संक्रमण वश असाता वेदनीयके स्वरूपसे परिणत हुए कर्मस्कन्धोंके असाता वेदनीयके समयप्रबद्ध होनेका विरोध है । कारण कि अकर्मस्वरूपसे स्थित पुद्‌गल यदि असाता वेदनीय कर्मके स्वरूपसे परिणत होते हैं तो वे असाता वेदनीयके समयप्रबद्ध कहे जाते हैं । इसलिये संक्रमण वश आये हुए कर्मपुद्‌गल स्कन्धोंकी समयप्रबद्ध संत्ता नहीं हो सकती, यह सिद्ध है ।

वैसा ग्रहण करनेपर साता वेदनीयके भी एक आवलीसे रहित तीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धार्थताका प्रसंग आता है, क्योंकि, बंधावलीसे रहित असाता वेदनीयकी स्थितिका साता वेदनीयके स्वरूपसे परिणत होकर साता वेदनीयके स्वरूपसे ही बन्धावलीसे हीन कर्मस्थिति मात्र काल तक अवस्थान देखा जाता है । परन्तु साता वेदनीयके इतने समयप्रबद्ध नहीं हैं, क्योंकि, सूत्रमें उसके पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम मात्र समयप्रबद्धोंका उपदेश है । यदि कहा जाय कि असाता वेदनीय साता वेदनीयके स्वरूपसे संक्रमणको प्राप्त होता है अत: उस कर्मकी पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण ही स्थिति हो सकती है, तो यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, काण्डकघातके बिना कर्मस्थितिका घात सम्भव नहीं है ।

इसी प्रकार साता वेदनीयके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ३० ।।

साता व असाता वेदनीयकी जितनी कालगत शक्तियाँ हैं उतनी ही उनकी प्रकृतियाँ हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

....

(१) अ-का-ताप्रतिषु 'सादसरूवेण संकंताए',इत्येतावानयं पाठो नोपलभ्यते ।

(२) आप्रतौ 'त्रुटितोऽत्र' पाठः, ताप्रतौ '-पबद्धट्ठतदुवदेसादो' इति पाठः ।

मोहणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ३१ ।।

सुगमं ।

मोहणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी सत्तरि-चत्तालीसं-वीसं-पण्णारस-दस-सागरोवमकोडाकोडीयो समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए[1] ।। ३२ ।।

मिच्छत्तस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीयो, सोलसण्णं कसायाणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीयो, अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेदाणं वीसं सागरोवमकोडा-कोडीयो, इत्थिवेदस्स पण्णारस सागरोवमकोडाकोडीओ, हस्स-रदि-पुरिसवेदाणं दस सागरोवमकोडाकोडीयो ट्ठिदी होदि । एदाहि कम्मट्ठिदीहि समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए एक्केक्का पयडी एत्तियमेत्ता होदि, समयभेदेण बद्धक्खंधाणं पि भेदादो । एत्थ वि सांतरबंधीणं पयडीणमसादावेयणीयकमो[2] वत्तव्वो । सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं समय-पबद्धट्ठदा कधं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता ? ण, मिच्छत्तकम्मट्ठिदिमेत्तसमयपब-द्धाणं समत्त-सम्ममिच्छत्तेसु संकंताणं सेचीयभावेण[3] सव्वेसिमुवलंभादो । तासिमबंधप-यडीणं कधं समयपबद्धट्ठदा । ण मिच्छत्तसरूवेण बद्धाणं कम्मक्खंधाणं लद्धसमयपबद्ध-

....

मोहनीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ३१ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

सत्तर, चालीस, बीस, पन्द्रह और दस कोडाकोडी सागरोपमोंको समयप्रबद्धार्थतासे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी मोहनीय कर्मकी एक एक प्रकृति है ।। ३२ ।।

मिथ्यात्वकी स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागरोपम, सोलह कषायोंकी चालीस कोडाकोडी सागरोपम, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, और नपुंसकवेदकी बीस कोडाकोडी सागरोपम, स्त्रीवेदकी पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम तथा हास्य, रति, और पुरुष वेदकी दस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण स्थिति है । इन कर्मस्थितियोंके द्वारा समयप्रबद्धार्थताको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो इतनी मात्र एक एक प्रकृति है, क्योंकि, कालके भेदसे बाँधे गये स्कंधोंका भी भेद होता है । यहाँपर भी सान्तरबन्धी प्रकृतियोंके क्रमको असाता वेदनीयके समान कहना चाहिये ।

शंका – सम्यक्त्व और सम्यङ्मिथ्यात्वकी समयप्रबद्धार्थता सत्तर कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण कैसे सम्भव है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, सम्यक्त्व और सम्यङ्मिथ्यात्वके रूपमें संक्रमणको प्राप्त हुए मिथ्यात्व कर्मकी स्थितिप्रमाण समयप्रबद्ध निषेक स्वरूपसे वहाँ सभी पाये जाते हैं ।

शंका – उन अबन्ध प्रकृतियोंके समयप्रबद्धार्थता कैसे सम्भव है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, मिथ्यात्व स्वरूपसे बाँधे गये व समयप्रबद्ध संज्ञाको प्राप्त हुए

....

(१) प्रतिषु 'गुणिदाओ' इति पाठः । (२) ताप्रतौ 'वेदणीयस्स' इति पाठः । (३) अप्रतौ 'सेचीयाभावेण' इति पाठः ।

ववएसाणं सम्मत्त–सम्मामिच्छत्तसरूवेण संकंताणं पि दव्वट्ठियणयेण तव्ववएसं पडि विरोहाभावादो । एस कमो अबंधपयडीणं चेव, ण बंधपयडीणं; पुरिसवेदस्स वि चालीस–सागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमयपबद्धट्ठदापसंगादो । ण च एवं, तहाविहसुत्ताणुवलंभादो ।

एवडियाओ पयडीओ ॥३३॥

जत्तिया समयपबध्दा तत्तियमेत्ताओ पयडीओ एक्केक्का पयडी होदि, कालभेदेण भेदुवलंभादो ।

आउअस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ॥३४॥

सुगमं ।

आउअस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी अंतोमुहुत्तमंतोमुहुत्तं समय–पबद्धट्ठदाए गुणिदाए ॥३५॥

अंतोमुहुत्तमंतोमुहुत्तमिदि विच्छाणिद्देसो । तेण चदुण्णमाउआणं अंतोमुहुत्तमेत्ता चेव ट्ठिदिबंधगद्धा होदि त्ति सिद्धं । एदीए बंधगद्धाए एगसमयपबद्धे गुणिदे चदुण्णमाउआणं पुध पुध समयपबद्धट्ठदापमाणं होदि । आउअस्स संखेवद्धाए ऊणपुव्वकोडि–तिभागमेत्ता समयपबद्धट्ठदा किण्ण परूविदा, कदलीघादमस्सिदूण अंतोमुहुत्तूणपुव्व[1]–

....

कर्मस्कन्धोंके सम्यक्त्व एवं सम्यङ्मिथ्यात्व स्वरूपसे संक्रान्त होनेपर भी उनको द्रव्यार्थिक नयसे समयप्रबद्ध कहनेमें कोई विरोध नहीं है । यह क्रम अबन्ध प्रकृतियोंके ही सम्भव है, बन्ध प्रकृतियोंके नहीं; क्योंकि, वैसा होनेपर पुरुषवेदके भी चालीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धार्थताका प्रसङ्ग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, उस प्रकारका कोई सूत्र नहीं है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ॥३३॥

जितने समयप्रबद्ध हों उतनी मात्र प्रकृतियों स्वरूप एक एक प्रकृति होती है, क्योंकि, कालके भेदसे प्रकृतिभेद पाया जाता है ।

आयु कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ॥३४॥

यह सूत्र सुगम है ।

अन्तर्मुहूर्त अन्तर्मुहूर्तको समयप्रबद्धार्थतासे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी आयु कर्मकी एक एक प्रकृति है ॥ ३५॥

'अन्तमुहूर्त अन्तर्मुहूर्त' यह वीप्सानिर्देश है । इसलिए चारों आयुओंका स्थितिबन्धक काल अन्तर्मुहूर्त मात्र ही है, यह सिद्ध है । इस बन्धककालसे एक समयप्रबद्धको गुणित करनेपर पृथक् पृथक् चारों आयुओंकी समयप्रबद्धार्थताका प्रमाण होता है ।

शंका– आयुके संक्षेपाद्धासे हीन पूर्वकोटिके त्रिभाग प्रमाण अथवा कदलीघातका आश्रय करके अन्तर्मुहूर्तसे हीन पूर्वकोटि प्रमाण समयप्रबद्धार्थता क्यों नहीं कही गई है ?

....

(१) प्रतिषु 'अंतोमुहुत्तेणपुव्व–' इति पाठः ।

कोडिमेत्ता वा ? ण एस दोसो, जहा सादादीणं एगसमयअबंधगो[1] होदूण बिदियसमए चेव बंधगो होदि, एवं ण आउअस्स; किं तु सेसाउअस्स बेत्तिभागं गंतूण चेव बंधगो होदि त्ति जाणावणट्ठं अंतोमुहुत्तग्गहणं कदं ।

एवडियाओ पयडीओ ।।३६।।

सुगमं ।

णामस्स कम्मस्स[1] केवडियाओ पयडीओ ।।३७।।

सुगमं ।

णामस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी वीसं-अट्ठारस-सोलस-पण्णारस-चोद्दस-बारस-दससागरोवम[2] कोडाकोडीयो समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए ।।३८।।

णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-एइंदियपंचिंदियजादि- (ओरालिय-वेउव्विय-) तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस-फास-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-अगुरुवलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-थावर-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेय-सरीर-अथिर-असुह-अणादेज्ज-दुभग-दुस्सर-अजसकित्ति-णिमिणणामाणं वीसं सागरो-

....

समाधान - यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिस प्रकार साता वेदनीय आदि कर्मोंका एक समय अबन्धक होकर द्वितीय समयमें ही बन्धक हो जाता है, इस प्रकार आयुकर्मका बन्धक नहीं होता; किन्तु शेष आयुके दो त्रिभाग बिताकर ही बन्धक होता है, यह बतलानेके लिए अन्तर्मुहूर्तका ग्रहण किया है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।।३६ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

नाम कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।।३७ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

बीस, अठारह, सोलह, पन्द्रह, चौदह, बारह और दस कोडाकोडी सागरोपमोंको समयप्रबद्धार्थता से गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी नामकर्मकी एक एक प्रकृति है ।।३८ ।।

नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय जाति व पंचेन्द्रिय जाति, (औदारिक, वैक्रियिक,) तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थावर, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अनादेय, दुर्भग, दुस्वर, अयशःकीर्ति और निर्माण इन नामकर्मकी

....

(१) ताप्रतौ 'एगसमयपबंधगो' इति पाठः । (२) आ-का-ताप्रतिषु 'णामकस्स' इति पाठः ।
(३) ताप्रतौ 'वारससागरोवम' इति पाठः ।

वमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-साधारण-उपज्जत्त-पंचमसंठाण-पंचमसंघडणाणमट्ठारससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो । चउत्थसंठाण-चउत्थसंघडणाणं सोलससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पण्णारससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि। तदियसंठाण-तदियसंघडणाणं चोद्दससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो । बिदियसंठाण-बिदियसंघडणाणं बारससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-समचउरससंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण-पसत्थविहायगदि-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्तीणं दससागरोवमकोडाकोडीयो उक्कस्सट्ठिदिबंधो[१] । एदाहि ट्ठिदीहि पुध पुध समयपबद्धे गुणिदे सग-सगसमयपबद्धट्ठदा होदि ।

संपहि आहारदुगस्स समयपबद्धट्ठदा संखेज्जंतोमुहुत्तमेत्ता । तं जहा-अट्ठवस्संतो, मुहुत्तस्सुवरि संजदो अंतोमुहुत्तकालमाहारदुगं बंधिय णियमा थक्कदि, पमत्तद्धाए आहारदुगस्स बंधाभावादो । एवमंतोमुहुत्तमबंधगो होदूण[२] पुणो अंतोमुहुत्तं बंधगो होदि, पडिवण्णअप्पमत्तभावत्तादो । एवमप्पमत्त-पमत्तद्धासु[३] बंधगो अबंधगो च होदूण ताव गच्छदि जाव[४] पुव्वकोडिचरिमसमओ त्ति । एदे अंतोमुहुत्ते उव्विणिदूण गहिदे संखेज्जं-

....

प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, पांचवाँ संस्थान और पांचवाँ संहनन इनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अठारह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । चौथे संस्थान और चौथे संहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सोलह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । तृतीय संस्थान और तृतीय संहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध चौदह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । द्वितीय संस्थान और द्वितीय संहननका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बारह कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशःकीर्ति इनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध दस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होता है । इन स्थितियोंके द्वारा पृथक् पृथक् समयप्रबद्धको गुणित करनेपर अपनी अपनी समयप्रबद्धार्थताका प्रमाण होता है ।

अब आहारकद्विककी समयप्रबद्धार्थताका प्रमाण संख्यात अन्तर्मुहूर्त मात्र है । यथा-आठ वर्ष व अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयत होकर अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारकद्विकको बाँधकर नियमसे थक जाता है, कारण कि प्रमत्तसंयतकालमें आहारकद्विकका बन्ध नहीं होता है । इस प्रकारसे अन्तर्मुहूर्त काल तक अबन्धक होकर फिरसे अन्तर्मुहूर्त काल तक बन्धक होता है, क्योंकि, तब उसने अप्रमत्तभावको प्राप्त कर लिया है । इस प्रकार अप्रमत्त व प्रमत्त कालोंमें क्रमसे बन्धक व अबन्धक होकर तब तक जाता है जब तक पूर्वकोटिका अन्तिम समय प्राप्त होता है ।

....

(१) ष. खं. पु. ६, चू. ६ सू. ७, १६, १९, ३०, ३६, ३९, ४२, गो. क. १२८-१३२ । (२) ताप्रतौ 'मबंधगो होदूण (पुणो अंतोमुहुत्तमबंधगो होदूण)' इति पाठः । (३) मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'एवमप्पमत्तद्धासु' इति पाठः । (४) अ-आकाप्रतिषु 'पुधकोडि' इति पाठः ।

तोमुहुत्तमेत्ता चेव समयपबद्धट्ठदा लब्भदि ।

तित्थयरस्स पुण सादिरेयतेत्तीससागरोवममेत्ता समयपबद्धट्ठदा लब्भदि । तं जहा- एगो देवो वा णेरइयो वा सम्मादिट्ठी पुव्वकोडाउअमणुस्सेसु उववण्णो, गब्भादिअट्ठ-वस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि तित्थयरणामकम्मबंधमागंतूण तदो प्पहुडि उवरि णिरंतरं बज्झदि जाव अवसेसपुव्वकोडिसमहियतेत्तीससागरोवमाणि त्ति, तित्थयरं बंधमाणसंजदस्स बद्धतेत्तीससागरोवममेत्तदेवाउअस्स देवेसुप्पण्णस्स तेत्तीससागरोवममेत्तकालं णिरंतरं बंधुवलंभादो : पुणो तत्तो चुदो समाणो पुणो वि तित्थयरणामकम्मं बंधदि जाव पुव्वकोडाउअमणुस्सेसु उप्पज्जिय वासपुधत्तावसेसे अपुव्वकरणो होदूण चरिमसत्तम-भागस्स पढमसमयअपुव्वकरणो त्ति । उवरि बंधो णत्थि, चरिमसत्तमभागस्स पढमसमए अणुप्पादाणुच्छेदेण बंधो वोच्छिज्जदि त्ति ससुत्ताइरियवयणुवलंभादो । वासपुधत्तं किमिदि उव्वराविदं ? ण एस दोसो, तित्थविहारस्स जहण्णेण वासपुधत्तमेत्तकालुवलंभादो । एवमादिमंतिमदोहि[1] वासपुधत्तेहि ऊणदोपुव्वकोडीहि सादिरेयतेत्तीससागरो-वममेत्ता तित्थयरस्स समयपबद्धट्ठदा होदि त्ति के वि आइरिया भणंति । तण्ण घडदे । कुदो? आहारदुगस्स संखेज्जवासमेत्ता तित्थयरस्स सादिरेयतेत्तीससागरोवममेत्ता[2] समयप-बद्धट्ठदा होंति त्ति सुत्ताभावादो । ण च सुत्तपडिकूलं वक्खाणं होदि, वक्खाणाभासत्तादो ।

....

इन अन्तर्मुहूर्तोंको समुच्चय रूपसे ग्रहण करनेपर संख्यात अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही समयप्रबद्धार्थता पायी जाती है ।

परन्तु तीर्थंकर प्रकृतिकी समयप्रबद्धार्थता साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण पायी जाती है । यथा-एक देव अथवा नारकी सम्यग्दृष्टि पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । उसके गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षोंके पश्चात् तीर्थंकर नामकर्म बन्धको प्राप्त हुआ । उससे आगे वह शेष पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण काल तक निरन्तर बँधता हैं, क्योंकि, जो संयत तेतीस सागरोपम प्रमाण देवायुको बाँधकर देवोंमें उत्पन्न हो तीर्थंकर प्रकृतिको बाँधता है उसके तेतीस सागरोपम प्रमाण काल तक उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । फिर वहाँ से च्युत होकर फिरसे भी वह पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होकर वर्ष पृथक्त्वके शेष रहनेपर अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती होकर अन्तिम सप्तम भागके प्रथम समयवर्ती अपूर्वकरण तक तीर्थंकर नामकर्मको बाँधता है । इसके आगे उसका बन्ध नहीं होता है, क्योंकि, ''अन्तिम सप्तम भागके प्रथम समयमें अनुत्पादानुच्छेदसे उसका बन्ध व्युच्छिन्न हो जाता है, ऐसा ससूत्राचार्यका वचन पाया जाता है ।

शंका- वर्षपृथक्त्वको अवशेष क्यों रखाया गया है ?

समाधान - यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीर्थविहारका काल जघन्य स्वरूपसे वर्षपृथक्त्व मात्र पाया जाता है ।

इस प्रकार आदि और अन्तके दो वर्षपृथक्त्वोंसे रहित तथा दो पूर्वकोटि अधिक तीर्थकर प्रकृतिकी तेतीस सागरोपम मात्र समयप्रबद्धार्थता होती है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, आहारकद्विककी संख्यात वर्ष मात्र और तीर्थंकर प्रकृतिकी साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धार्थता है, ऐसा कोई सूत्र नहीं है । और सूत्रके

....

(१) ताप्रतौ 'एवमादिमंतरियदोहि' इति पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'मेत्तो' इति पाठः ।

ण च जुत्तीए सुत्तस्स बाहा संभवदि, सयलबाहादीदस्स सुत्तववएसादो । जदि एवं तो एदेसिं कम्माणं तिण्णं केवडिया समयबद्धट्ठदा ? वीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता । एदेसिं तिण्णं कम्माणमुक्कस्सट्ठिदिबंधो अंतोकोडाकोडिमेत्तो चेव । ण च तेत्तियं कालमेदेसिं बंधो वि संभवदि, कमेण संखेज्जवस्ससादिरेयतेत्तीससागरोवममेत्तकालबंधुवलंभादो । जेसिमंतो-कोडाकोडिमेत्ता वि समयपबद्धट्ठदा ण संभवदि कधं तेसिं वीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमय-पबद्धाणं संभवो त्ति ? ण एस दोसो, एदेसु तिसु कम्मेसु बज्झमाणेसु वीसंसागरोवमकोडाको-डीसु संचिदणामकम्मसमयपबद्धेसु एदेसु संकममाणेसु वीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमयप-बद्धट्ठदाए उवलंभादो । एदाओ तिण्णि वि बंधपयडीओ । ण च बंधपयडीणं संकमेण मसयपब-द्धट्ठदा वोत्तुं सक्किज्जदे, सादस्स वि तीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्तसमयपबद्धट्ठदापसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा- जासिं पयडीणं ट्ठिदिसंतादो उवरि कम्हि वि काले ट्ठिदिबंधो संभवदि ताओ बंधपयडीओ णाम । जासिं पुण पयडीणं बंधो चेव णत्थि, बंधे संते वि जासिं पयडीणं ट्ठिदिसंतादो उवरि सव्वकालं बंधो ण संभवदि; ताओ संतपयडीओ, संतपहाणत्तादो । ण च आहारदुग-तित्थयराणं ट्ठिदिसंतादो उवरि बंधो अत्थि, सम्माइट्ठीसु

....

प्रतिकूल व्याख्यान होता नहीं है, क्योंकि, वह व्याख्यानाभास कहा जाता है । यदि कहा जाय कि युक्तिसे सूत्रको बाधा पहुँचाई जा सकती है, सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, जो समस्त बाधाओंसे रहित होता है उसकी सूत्र संज्ञा है ।

शंका – यदि ऐसा है तो फिर इन तीन कर्मोंकी समयप्रबद्धार्थता कितनी है ?

समाधान – उनकी समयप्रबद्धार्थता बीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण है ।

शंका – इन तीन कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अन्त:कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण ही होता है । परन्तु इतने काल तक उनका बन्ध भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, वह क्रमसे संख्यात वर्ष और साधिक तेतीस सागरोपम काल तक ही पाया जाता है । इसलिए जिनकी अन्त:कोडाकोडी मात्र भी समय-प्रबद्धार्थता सम्भव नहीं है उनके बीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धोंकी सम्भावना कैसे की जा सकती है ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बँधते समय इन तीनों कर्मोंमें बीस कोडाकोडी सागरोपमोंमें संचयको प्राप्त हुए नामकर्मके समयप्रबद्धोंका संक्रमण होनेपर इनकी बीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण समयप्रबद्धार्थता पायी जाती है ।

शंका – ये तीनों ही बन्धप्रकृतियाँ हैं, और बन्धप्रकृतियोंकी संक्रमणसे समयप्रबद्धार्थता कहना शक्य नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर साता वेदनीयकी भी समयप्रबद्धार्थता तीस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण प्राप्त होती है ?

समाधान – यहाँ उक्त शंकाका परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है–जिन प्रकृतियोंका स्थितिसत्त्वसे अधिक किसी भी कालमें बन्ध सम्भव है वे बन्धप्रकृतियाँ कही जाती हैं । परन्तु जिन प्रकृतियोंका बन्ध ही नहीं होता है और बन्धके होनेपर भी जिन प्रकृतियोंका स्थितिसत्त्वसे अधिक सदा काल बन्ध सम्भव नहीं है वे सत्त्वप्रकृतियाँ हैं, क्योंकि, सत्त्वकी प्रधानता है । आहार-कद्विक और तीर्थंकर प्रकृतिका स्थितिसत्त्वसे अधिक बन्ध सम्भव नहीं है, क्योंकि, वह सम्यग्दष्टियोंमें

तदणुवलंभादो तम्हा सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं व एदाणि तिण्णि वि संतकम्माणि । तदो जहा सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं समयपबद्धट्ठदा संकमेण परूविदा तहा एदासिं पि संकमेणेव परूवेदव्वा, संतकम्मत्तं पडि भेदाभावादो । जदि वि संकमेण समयपबद्धट्ठदा वुच्चदे तो वि उक्कस्सट्ठिदिमेत्ता समयपबद्धट्ठदा णोवलब्भदे, सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेसु कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि अंतरमेत्तकालम्हि बद्धसमयपबद्धाणं संकमाभावादो आहार-तित्थयरेसु उदयावलियमेत्तसमयपबद्धाणं संकमाभावादो त्ति ? ण एस दोसो, णाणाकालेसु णाणाजीवे अस्सिदूण परूविज्जमाणे सव्वेसिं समयपबद्धाणं संकमुवलंभादो । ण च कम्मट्ठिदीए आदीए चेव एत्थ होदि त्ति णियमो अत्थि, अणादिसंसारे बुद्धिबलसिद्धआदिदंसणादो । एत्थ जं गंथबहुत्तभएण ण वुत्तं[1] तं चिंतिय वत्तव्वं ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ३९ ।।

जत्तिया समयपबद्धा पुव्वं परूविदा एक्केक्किस्से पयडीए तत्तियमेत्ताओ पयडीओ होंति त्ति घेत्तव्वं ।

गोदस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ।। ४० ।।

सुगमं ।

....

पाया जाता है । इस कारण सम्यक्त्व व सम्यङ्मिथ्यात्वके समान ये तीनों ही सत्त्वप्रकृतियाँ हैं । अतएव जिस प्रकार सम्यक्त्व व सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृतियोंकी समयप्रबद्धार्थताकी संक्रमण द्वारा प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार उनकी भी समयप्रबद्धार्थताकी प्ररूपणा संक्रमण द्वारा करनी चाहिये, क्योंकि, सत्कर्मताके प्रति उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

शंका – यद्यपि संक्रमणसे इनकी समयप्रबद्धार्थता बतलाई जा रही है तो भी इनकी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण समयप्रबद्धार्थता नहीं पायी जाती है, क्योंकि, सम्यक्त्व और सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृतियोंमें कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर अनन्तर प्रमाण कालमें बाँधे गयें समयप्रबद्धोंके संक्रमणका अभाव है, तथा आहारद्विक और तीर्थंकर प्रकृतियोंमें उदयावली प्रमाण समयप्रबद्धोंके संक्रमणका अभाव हैं ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं हैं, क्योंकि नाना कालोंमें नाना जीवोंका आश्रय करके प्ररूपणा करनेपर सब समयप्रबद्धोंका संक्रमण पाया जाता है । दूसरे, यहाँ कर्मस्थितिके आदिमें ही होता है, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, अनादि संसारमें बुद्धिबलसे सिद्ध आदि देखी जाती है ।

यहाँ ग्रन्थकी अधिकताके भयसे जो नहीं कहा गया है उसको विचार कर कहना चाहिये ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ३९ ।।

एक एक प्रकृतिके जितने समयप्रबद्ध पहले कहे गये हैं उतनी मात्र प्रकृतियाँ होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

गोत्र कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ४० ।।

यह सूत्र सुगम है ।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'भएण वुत्तं' इति पाठः ।

गोदस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी बीसं-दससागरोवमकोडा-कोडीओ समयपबद्धट्ठदाए गुणिदाए ।। ४१ ।।

वीसंसागरोवमकोडाकोडीहि एगसमयपबद्धे गुणिदे णीचागोदस्स समयपबद्धट्ठदापमाणं होदि । दससागरोवमकोडाकोडीहि गुणिदे उच्चागोदस्स समयपबद्धट्ठदापमाणं होदि । एत्थ सादासादाणं परूविदविहाणं संचिंतिय वत्तव्वं ।

एवडियाओ पयडीओ ।। ४२ ।।

सुगमं ।

एवं समयपबद्धट्ठदा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

खेत्तपच्चासे त्ति ।। ४३ ।।

एदमहियारसंभालणसुत्तं । प्रत्यास्यते अस्मिन्निति प्रत्यास:; क्षेत्रं तत्प्रत्यासश्च क्षेत्रप्रत्यास: । जीवेण ओट्ठद्धखेत्तस्स खेत्तपच्चासे त्ति सण्णा ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ४४ ।।

सुगमं ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स जो मच्छो जोयणसहस्सओ संयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरल्लए तडे अच्छिदो, वेयणसमुग्घादेण समुहदो,

....

बीस और दस कोडाकोडी सागरोपमोंको समयप्रबद्धार्थता से गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतनी गोत्र कर्मकी एक एक प्रकृति है ।। ४१ ।।

एक समयप्रबद्धको बीस कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित करनेपर नीच गोत्रकी समयप्रबद्धार्थताका प्रमाण होता है । तथा दस कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित करनेपर उच्चगोत्रकी समयप्रबद्धार्थताका प्रमाण होता है । साता व असाता वेदनीयके सम्बन्धमें जो विधि प्ररूपित की गई है उसको भले प्रकार विचार कर यहाँ भी कहनी चाहिये ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ४२ ।।

यह सूत्र सुगम हैं ।

इस प्रकार समयप्रबद्धार्थता यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

क्षेत्रप्रत्यास अनुयोगद्वारका अधिकार है ।। ४३ ।।

यह सूत्र अधिकारका स्मरण कराता है ।

जहाँ समीपमें रहा जाता है वह प्रत्यास कहा जाता है, क्षेत्ररूप प्रत्यास क्षेत्रप्रत्यास, इस प्रकार यहाँ कर्मधारय समास है । जीवके द्वारा अवष्टब्ध (अवलम्बित) क्षेत्रकी क्षेत्रप्रत्यास संज्ञा है ।

ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ४४ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

जो मत्स्य एक हजार योजन प्रमाण है, स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य

काउलेस्सियाए लग्गो, पुणरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो, तिण्णि विग्गहगदिकंडयाणि काऊण से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जिहदि त्ति ।। ४५ ।।

एदेण सव्वेण वि सुत्तेण णाणावरणीयस्स उक्कस्सखेत्तपच्चासो परूविदो । एदस्स सुत्तस्स अत्थो वि सुगमो, खेत्तविहाणे परूविदत्तादो ।

खेत्तपच्चासेण गुणिदाओ ।। ४६ ।।

पुवुत्तेण खेत्तपच्चासेण गुणिदाओ समयपबद्धट्ठदापयडीओ एत्थतणपयडिपमाणं होंति।

एवडियाओ पयडीओ ।। ४७ ।।

पयडिअट्ठदाए जाओ पयडीओ णाणावरणीयस्स परूविदाओ ताओ अप्पप्पणो समयपबद्धट्ठदाए गुणेदव्वाओ । एवं गुणिदे समयपबद्धट्ठदापयडीओ होंति । पुणो तासु खेत्तपच्चासेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण गुणिदासु एत्थतणपयडीओ होंति । एत्थ तेरासियकमेण पयडिपमाणमाणेदव्वं ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं ।। ४८ ।।

....

तटपर स्थित है, वेदनासमुद्घातको प्राप्त हुआ है, कापोतलेश्यासे संलग्न है, इसके बाद मारणंतिक समुद्घातको प्राप्त हुआ है, विग्रहगतिके तीन काण्डकोंको करके अनन्तर समयमें नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, उसके ज्ञानावरण कर्मकी जो एक एक प्रकृति होती है ।। ४५ ।।

इस सब ही सूत्र के द्वारा ज्ञानावरणीय कर्मके उत्कृष्ट क्षेत्र प्रत्यासकी प्ररूपणा की गई है । इस सूत्रका अर्थ भी सुगम है, क्योंकि, क्षेत्रविधानमें उसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

उन्हें क्षेत्रप्रत्याससे गुणित करनेपर ज्ञानावरणकी क्षेत्रप्रत्यास प्रकृतियोंका प्रमाण होता है ।। ४६ ।।

पूर्वोक्त क्षेत्र प्रत्याससे समय प्रबद्धार्थता प्रकृतियोंको गुणित करनेपर यहाँकी प्रकृतियोंका प्रमाण होता है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ४७ ।।

प्रकृत्यर्थतामें ज्ञानावरणकी जिन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की गई है उनको अपनी अपनी समयप्रबद्धार्थतासे गुणित करना चाहिये । इस प्रकार गुणित करनेपर समयप्रबद्धार्थता प्रकृतियाँ होती हैं। फिर उनको जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र क्षेत्रप्रत्याससे गुणित करनेपर यहाँकी प्रकृतियाँ होती हैं । यहाँ त्रैराशिक क्रमसे प्रकृतियोंका प्रमाण लाना चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मोंके सम्बन्धमें प्ररूपणा करनी चाहिये ।। ४८ ।।

जहा णाणावरणीयस्स समयपबद्धट्ठदापयडीओ खेत्तपच्चासेण गुणिय आणिदाओ तहा एदेसिं वि तिण्णं कम्माणं खेत्तपच्चासपयडिपमाणमाणेदव्वं ।

वेयणीयस्स कम्मस्स केवडियाओ पयडीओ ? ।। ४९ ।।

सुगमं

वेयणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी अण्णदरस्स केवलिस्स केवलिसमुग्घादेण समुग्घादस्स सव्वलोगं गदस्स ।। ५० ।।

एदेण सुत्तेण खेत्तपच्चासपमाणं परूविदं संभालिदं वा, खेत्तविहाणे परूविदत्तादो ।

खेत्तपच्चासेण गुणिदाओ ।। ५१ ।।

वेयणीयस्स एक्केक्का पयडी खेत्तपच्चासेण गुणिदा संती असंखेज्जाओ पयडीओ होंति । एक्का समयपबद्धट्ठदापयडी[१] जदि घणलोगमेत्ता होदि तो सव्वासिं किं लभामो त्ति खेत्तपच्चासगुणगारो साहेयव्वो । 'वेयणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी सव्वलोगं गदस्स केवलिस्स, खेत्तपच्चासेण गुणिदाओ' त्ति कधमेत्थ भिण्णाहियरणाणं संबंधो ? ण,

....

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मकी समयप्रबद्धार्थता प्रकृतियोंको क्षेत्रप्रत्याससे गुणित करके लाया गया है उसी प्रकार इन तीनों ही कर्मोंके क्षेत्रप्रत्यासरूप प्रकृतियोंके प्रमाणको लाना चाहिये ।

वेदनीय कर्मकी कितनी प्रकृतियाँ हैं ? ।। ४९ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

केवलिसमुद्घातसे समुद्घाताको प्राप्त होकर सर्व लोकको प्राप्त हुए अन्यतर केवलीके जो वेदनीय कर्मकी एक एक प्रकृति होती है ।। ५० ।।

इस सूत्रके द्वारा क्षेत्रप्रत्यासके प्रमाण की प्ररूपणा की गई है । अथवा, उनका स्मरण कराया गया है, क्योंकि, उसकी प्ररूपणा क्षेत्रविधानमें की जा चुकी है ।

उन्हें क्षेत्र प्रत्याससे गुणित करनेपर वेदनीय कर्मकी क्षेत्रप्रत्यास प्रकृतियोंका प्रमाण होता है ।। ५१ ।।

वेदनीय कर्मकी एक एक प्रकृति क्षेत्रप्रत्याससे गुणित होकर असंख्यात प्रकृतियाँ होती हैं । यदि एक समय प्रबद्धार्थता प्रकृति घनलोक प्रमाण है तो सब प्रकृतियाँ कितनी होंगी, इस प्रकार क्षेत्रप्रत्यासके गुणकारको सिद्ध करना चाहिये ।

शंका – 'वेयणीयस्स कम्मस्स एक्केक्का पयडी सव्वलोगं गदस्स केवलिस्स खेत्तपच्चासेण गुणिदाओ' यहाँ चूँकि 'पयडी' पद एकवचन और 'गुणिदाओ' पद बहुवचन है, अतएव यहाँ इन भिन्न अधिकरणवालोंका संबंध किस प्रकार हो सकता है ?

....

(१) आप्रतौ '–पबद्धट्ठदा वयदा पयडी', काप्रतौ 'पबद्धट्ठदा पयदपयडी', ता प्रतौ 'पबद्धट्ठदा पयदा पयडी' इति पाठः।

एक्केक्का इदि [1]विच्छाणिद्देसेण सगंतोक्खित्तबहुत्तेण समाणाहियरणत्तं पडि विरोहाभावादो।

एवडियाओ पयडीओ ।। ५२ ।।

सुगमं ।

एवमाउअ-णामा-गोदाणं ।। ५३ ।।

सुगमं ।

एवं खेत्तपच्चासे त्ति अणुयोगद्दारे समत्ते वेयणापरिमाणविहाणे[2] त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

....

समाधान – नहीं, क्योंकि, 'एक्केक्का' इस प्रकार अपने भीतर बहुत्वको रखनेवाले वीप्सानिर्देशसे उनका समानाधिकरण होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

उसकी इतनी प्रकृतियाँ हैं ।। ५२ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये ।। ५३ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार क्षेत्र प्रत्यास अनुयोगद्वारके समाप्त होनेपर वेदनापरिमाण
विधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

● ● ●